भगवान महावीर की २१वी सदी में आवश्यकता



संकलक - प्रोफसेर डॉ ऋषि आचार्य

भगवान महावीर की २१वी सदी में आवश्यकता

भगवान महावीर का जन्म विक्रम संवत से लगभग 522 वर्ष पूर्व हुआ था| जैन ग्रंथों के अनुसार यह धर्म उससे बहुत पहले से प्रचलित था| जैन धर्म की मूल विचारधारा, जिसको हम कर्मकांड के मुकाबले में ज्ञानमार्ग कह सकते हैं, भारतवर्ष में प्राचीन काल से वैदिक यज्ञ के साथ चली आई थी| भगवान महावीर स्वामी का महत्व इसी में है कि उन्होंने इसको एक व्यवस्थित संगठन का रूप देकर जनता को भी इसकी प्रेरणा दी और गृहस्थों के लिए एक श्रवण-श्रेणी पृथक निर्माण कर दी|

भगवान महावीर की त्याग वृत्ति

भगवान महावीर को इस नश्वर जगत के पर चिंतन करने के बाद धन की ममता और स्वार्थ भावना मनुष्य के पतन का कारण जान पड़ी थी और वे समाज के सामने एक प्रकार का आदर्श और उदाहरण उपस्थित करना चाहते थे| लोगों को बतलाना चाहते थे कि धन की अनुचित अभिलाषा रखना, करोड़ों रुपया इकट्ठा करके जगत-सेठ और नगर-सेठ बनने की महत्वाकांक्षा करना व्यक्ति और समाज दोनों के लिए पतनकारी है| इस प्रकार की बातों को मुँह

से तो बहुत से लोग कहते हैं और सिद्धांत रूप में मानने वालों की भी कमी नहीं, पर उनको स्वयं व्यवहार में लाने वाले सब प्रकार के साधन और सामर्थ्य होने पर भी समाज के कल्याणार्थ निर्धनता का जीवन अपनाने वाले कदाचित ही कहीं दिखाई पड़ते हैं| क्या समाज को सम्पन्न बनाने के लिए भगवान् महावीर के समान जानबूझकर निर्धन जीवन चुनना हम कर सकते है?

भगवान महावीर ने एक वैभवशाली नरेश के पुत्र और परम शक्ति संपन्न होने पर भी धन-लोलुपता के मार्ग को त्याग कर, त्याग और अपरिग्रह के आदर्श को जनसाधारण के समक्ष रखने का निर्णय किया| महावीर स्वामी को भी समाज में फैली हुई कुरीतियों को मिटाना था ऐसी दशा में जो लोग उन कुरीतियों के आधार पर ही लाभ उठा रहे थे, अपना उदर पोषण करते रहे थे उन से टक्कर हो जाना स्वाभाविक ही था| अपने आदर्शों की रक्षा करने के भगवान ने जो कष्ट उठाये उसे सोचकर ही भय लगने लगता है| अपने उच्च आदर्शों के लिए स्वयं तक को बलिदान कर देना भगवान ने स्वयं अपने जीवन से सारे संसार को सिखाया |

तपस्या की विचारधारा

भगवान महावीर ने 'बारह भावना' नाम से अपनी विचारधारा को प्रस्तुत किया और इसमें संदेह नहीं है कि जो कोई उसका मनन और अनुसरण करेगा वह कभी अपने निश्चित कर्तव्य मार्ग से पीछे कदम नहीं रखेगा| यह 'बारह भावनाएं' आज प्रत्येक मनुष्य के लिए, प्रत्येक जाति, धर्म और राष्ट्र की उन्नति के लिए उतनी ही प्रासंगिक थी जितनी आज से हजारों वर्ष पूर्व थी | आज हम सभी को इन बारह-भावनाओं को अपने जीवन में उतारना अत्यंत आवश्यक है|

१. अनित्य भावना- शरीर रोगों का घर है, इंद्रिय सुख क्षणभंगुर है इसलिए इस अनित्य जगत के लिए मैं उत्सुक नहीं होऊंगा|

२. अशरण भावना- संसारी प्राणियों को रोग और मृत्यु से रक्षा करने वाला कोई नहीं है|यह जानकर नए दूषित कर्मों का निर्माण नहीं करूंगा| मुझे अवश्य अपने किए हुए कर्मों को भोगना पड़ेगा|

३. संसारानुप्रेक्षा भावना- यह संसार अनादि -अनंत है| इसमें मूढ़ जीवों को ही सुख दृष्टिगोचर होता है पर ज्ञानी लोग इसे दुःख रूप ही देखते है इसलिए मैं इस संसार के कष्टों से छूटने का प्रयत्न करता रहूँगा|

४. एकत्व भावना- इसमें प्रत्येक प्राणी को जन्म धारण करके, अकेले ही इस संसार रूपी वन में भटकना पड़ता है, अकेले ही दुख सहन करना पड़ता है इस तथ्य को सदैव ध्यान रहूँगा|

५.अन्यत्व भावना- संसारिक समस्त पदार्थ मुझसे अलग है, रिश्ते नाते मित्र संबंधी भी अपने नहीं हैं यह सतत अनुभव करता रहूँगा|

६.अशुचि भावना- यह शरीर रुधिर, वीर्य आदि से उत्पन्न हुआ है तथा सप्त धातुओं और मल मूत्र आदि से भरा है| मेरे लिए ऐसे अशुचि पदार्थों के भंडार इस 'देह' का गर्व करना अनुचित है|

७. **आस्रव भावना-** जिस प्रकार छिद्रयुक्त जहाज में जल भरते रहने से वह समुद्र में डूब जाता है, ठीक उसी प्रकार यह जीव भी कर्मों के भार से संसार सागर में डूबता उतरता रहता है| मैं मन, वचन, कर्म से ऐसा कार्य नहीं करूँगा जो मुझे नए कर्म बंधन में डालने वाला हो|

8. निर्जरा भावना- मैं तप और योग द्वारा पूर्व कर्मबंधनों को काटने और उनसे छूटने का उपाय करूँगा|

९. सँवर भावना - शुभ और अशुभ दोनों भावनाओं से परे समकित भावना से रहने का अभ्यास करूँगा|

१०. लोक भावना- ब्रह्माण्ड के रूप और विभाजन तथा विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित स्तिथियों की प्रकृति, जैसे स्वर्ग, नरक, इत्यादि यथायोग्य ज्ञान रखूँगा ;

११. बोधिदुर्लभ भावना – मनुष्य जन्म प्राप्त करने में, और तत्पश्चात्, सच्ची आस्था पाने में बेहद कठिनाई होती है यह जानकर अपने जीवन को पतन से बचाऊँगा और उत्थान का प्रयास करूँगा ;

१२. धर्म भावना- मेरा अहोभाग्य है कि मुझे यह प्राणिमात्र के कल्याण करने में सर्वसमर्थ और तीर्थंकरों की देशना से अनुस्यूत ऐसा धर्म मिला है| अब मैं इसे सतत चिन्तन व मनन कर तदनुरूप आचरण में उतारने का प्रयत्न करता रहूँगा|

भगवान महावीर की यह विचारधारा जहाँ एक अध्यात्मवादी साधक के लिए भी अनुकूल है वही जनसेवा की मनोवृत्ति भी इससे पूर्णत: प्रस्फुटित होती थी| आजकल के जो सार्वजनिक कार्यकर्ता और सामाजिक नेता इस प्रकार उच्च भावनाओं से वंचित रहते हैं वे ही प्रायः सार्वजनिक जीवन में स्वार्थपरता और भ्रष्टाचार की वृद्धि करने वाले होते हैं|

अन्यत्व भावना का उपदेश करते हुए भगवान महावीर स्वामी ने लोगों को कहा कि सांसारिक जीवन व्यतीत करते हुए भी कभी भी उस में इतने अधिक लिप्त ना हो जाओ कि समाजोत्थान या मातृभूमि की रक्षा जैसा कोई महत्वपूर्ण कार्य सम्मुख आने पर भी उससे परिवार के बन्धन के कारण कतराते रहो|

भगवान महावीर स्वामी की अशुचि भावना का तात्पर्य यही है कि मनुष्य अपनी वास्तविकता पर विचार करता रहे जिससे उसके भीतर झूठा अभिमान पैदा ना हो और वह दूसरों के साथ नम्रता और विनय का व्यवहार करता रहे| भगवान महावीर स्वामी की भावनाओं पर आचरण करने से केवल जैन ही नहीं संसार का प्रत्येक मनुष्य ने आत्म कल्याण और समाज कल्याण दोनों की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान तक पहुंच सकता है |

अहिंसा परमो धर्मः

भगवान महावीर का सबसे बड़ा सिद्धांत अहिंसा का है| उनके समस्त दर्शन, चरित्र, आचार-विचार का आधार एक इसी अहिंसा सिद्धांत पर है| गौर से देखा जाए तो स्वार्थपरता, बेईमानी, धोखेबाजी यह सब हिंसा के ही प्रतिरूप है | इसी प्रकार का व्यवहार होते हुए दो व्यक्तियों अथवा दो राष्ट्रों में वास्तविक मित्रता कदापि नहीं हो सकती, चाहे दुनिया को दिखाने के लिए किसी अवसर पर मेल-मिलाप का ढ़ोंगभले ही कर ले| इसलिए संसार की वर्तमान अशांतिपूर्ण अवस्था का सुधार करने तथा मानव जाति की महानाश से रक्षा करने का एकमात्र उपाय अहिंसा की भावना का प्रसार होना ही है| इस दृष्टि से महावीर स्वामी का जीवन आजकल के मनुष्यों के लिए तो एक महान आदर्श की तरह ही माना जा सकता है|

अपरिग्रह की महिमा

भगवान महावीर का दूसरा महान सिद्धांत अपरिग्रह है| इसका आशय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं को यथाशक्ति घटाना चाहिए और अपने पास स्वयं ही निश्चित की हुई एक सीमा से अधिक जीवन निर्वाह की सामग्री का संग्रह नहीं होना चाहिए| जैन सिद्धांत में केवल सम्पतियाँ और सामग्री को इकट्ठा न करना

ही अपरिग्रह नहीं बतलाया है, वरन वाहन, व्यापार, उद्योग-धंधे, नौकरी, खानपान, मनोरंजन आदि सभी कार्यों को नियमित और निर्धारित मात्रा में करने का आदेश दिया दिया है|

टिप्पणी: भगवान् महावीर से सिद्धांतो का आदर करने का अर्थ है की महंगे कपड़ो से लदी अलमारियाँ, कई-कई जोड़ी जूते, अनेकों घड़ियाँ, गहने-गाँठे, कई कई गाड़ियों के लोभ में रहते हुए हमारा ध्यान समाज के उन निर्धन, निरक्षर, भूखे भारतवासियों पर कब जायेगा| भगवान महावीर का अपरिग्रह सिद्धांत आज जीवन में उतरना कितना आवश्यक है आप स्वयं सोचिये|

यदि हम वर्तमान जगत की अशांतिपूर्ण अवस्था पर गहराई से विचार करें तो हमको उसके मूल में संपत्ति और संचयवृत्ति ही मिलेगी| जो कुछ है उससे और अधिक पाने की तृष्णा ने आज समाज में सहयोग और त्याग के ढांचे को तोड़ कर रख दिया है| आज जो दुनिया में आर्थिक विषमता फैली है उसका कारण मनुष्य की अनावश्यक संचय की वृत्ति ही है| यदि सब लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुये अपने पास रखें और अतिरिक्त सामग्री को समाज के अन्य सदस्यों के उपयोग के लिए दे डालें तो आज दुनिया में जितनी अशांति दिखाई दे रही है उसका दशमांश भी ना रहे| संपत्ति के बँटवारे की जो समस्या दुनिया के सामने उपस्थित हैं वह बिना किसी कानून के स्वयं ही अधिकांश रुप से हल हो जावे|

भगवान महावीर ने अपने जीवन में सत्यव्रत, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व्रत जैसे जीवन निर्माणकारी व्रतों का उपदेश किया|

सत्यव्रत का अर्थ सामान्य दृष्टि से केवल इतना ही नहीं है कि जो वस्तु जैसी देखी या सुनी हो उसे वैसे ही कह दो| यह तो सत्य का साधारण लक्षण है परंतु सत्यव्रत का व्यापक अर्थ है कि अपने निजी स्वार्थ के लिए समाज में असत्य का सहारा लेकर लाभ कमाने जैसा कोई प्रयत्न किया जाए| उनके इस सिद्धांत के आधार पर नकली वस्तुओं को असली कहना, अशुद्ध को शुद्ध कहकर लाभ कमाने का प्रयत्न सत्यव्रत का उल्लंघन ही माना जाएगा|

टिपण्णी: आज हमारे देश को भगवान महावीर के इस सत्यव्रत की बहुत बड़ी आवश्यकता है| खाने के सामानों में मिलावट का जहर घोलकर पैसा कमाने वाले भगवान महावीर के इस सत्यव्रत को अपना लें तो समाज का बहुत बड़ा कल्याण हो सकता है|

अचौर्य व्रत- दूसरे मनुष्य की किसी वस्तु को जानबूझकर या धोखे से छुपा कर ले लेना ही चोरी है| अचौर्य व्रत ग्रहण करने वाले को चाहे वह व्यापारी हो, चाहे सरकारी नौकर, चाहे किसी प्रकार का कारीगर, दस्तकार हो सदैव अपनी परिश्रम की कमाई पर ही संतोष करना चाहिए| इससे वह सदा सुखी रहेगा और सद्गति का अधिकारी होगा|
टिप्पणी: आज के परिप्रेक्ष्य में निजी स्वार्थ के लिए मिलावट , घरों में बिजली की चोरी , व्यवसाय में टैक्स की चोरी भी अचौर्य व्रत का उल्लंघन ही है| क्या हम सभी भगवान की इस देशना के प्रति भी सजग और सतर्क है|

ब्रह्मचर्य व्रत : भगवान महावीर ने इस व्रत के अंतर्गत सभी को अपनी 'स्वाद-इंद्रिय' और 'काम-इंद्रिय' के संयम का महत्व बताया| कामवासना की अधिकता और दुराचार व्याभिचार में प्रवृत्त होना इतना बड़ा दुर्गुण है कि यह अनेक अन्य गुणों पर पानी फेर देता है| ऐसे व्यक्ति का न ही सम्मान होता है, न कोई उसे विश्वासपात्र ही समझता है| आज देश में आए दिन हो रहे बलात्कारों, अनाचारों को रोकने के लिए भगवान महावीर के सिद्धांत की इस सिद्धांत के प्रचार प्रसार की अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है|

टिप्पणी: 'स्वाद इन्द्रिय' की गुलामी भी इतनी भयंकर हो चली है की भगवान महावीर की जय कहने वाले ही कई लोग जबान के स्वाद के चक्कर में माँसाहार और मदिरापान में आसक्त हो चले है|

भारत वर्ष में धर्म के नाम पर मूक पशुओं का वध करने की कुरीति को भगवान महावीर ने ही दूर किया| उनके दर्शन की छाप न केवल जैन धर्म तक सीमित रही बल्कि वैष्णव ,बौद्ध आदि धर्मो तक भी उनके सदुपदेशो ने एक नई चेतना का प्रचार प्रसार किया| सारे देश में बड़े पैमान पर हिंसाचार बंद हो गया|

समाज और विश्व के कल्याण की सतत चिंता करते हुए भगवान महावीर स्वामी निरंतर उपदेश करते रहे, विचरण करते रहे| स्वार्थी और लोभी लोगों के द्वारा अनेकों प्रकार के दुख और कष्ट देने के बावजूद भी भगवान सर्वत्र कल्याण और मैत्री की भावना को हृदय में धारण करते हुए समाज के गरीब और पिछड़े हुए वर्गों को ऊपर उठने की विद्या सिखाते रहे| अगर हम स्वयं को भगवान महावीर के सच्चे अर्थों में सेवक और भक्त मानते हैं तो आज हमें अपने आप से यह भी पूछना चाहिए कि हम समाज के गरीब और पिछड़े हुए वर्गों को ऊपर उठाने के लिए किस प्रकार प्रयत्न कर कर रहे हैं?

भगवान महावीर अहिंसा के परम उपासक थे, इसलिए किसी भी दशा में विरोधी को क्षति पहुँचाने की कल्पना भी नहीं करते थे| वह किसी के प्रति कठोर वचन भी नहीं बोलते थे और जो उनका विरोध करता उसको विनम्रता और मधुरता से ही समझाते थे| इस प्रकार लोग उनके महत्व समझ जाते थे और उनकी आंतरिक भावना के प्रभाव से उनके भक्त बन जाते थे| समाज सुधार का प्रयत्न करने का मतलब समाज के अवगुणों की निंदा करते रहना नहीं है बल्कि परम विनय, प्रेम,और सहनशीलता के द्वारा समाज के सामूहिक चरित्र को ऊपर उठाना ही भगवान महावीर के मार्ग का अनुसरण करना है|

आज के युग में भगवान के इन वैश्विक सिद्धांतों को जन-जन तक ले जाने के लिए पहले हमें अपने जीवन को उनके अनुरूप जीना होगा| घर छोड़ कर सन्यास ले लाना ही इस आंदोलन का एक मात्र तरीका नहीं है, साधारण गृहस्थ में अपने स्तर पर देश की दशा सुधारने में, जिन-सिद्धांतो की सही प्रभावना करने में एक बड़ी भूमिका निभा सकते है|

इस लघु-पुस्तिका की अधिकांश सामग्री गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के वांग्मय “सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक” ग्रन्थ से साभार ली गयी है| इस पुस्तिका का निर्माण घर-घर तक भगवान महावीर के संदेशो के प्रचार के लक्ष्य से किया गया है| इसी प्रकार का अन्य प्रेरणादाई साहित्य पढ़ने के लिए “युग-साहित्य केंद्र” , महालक्ष्मी मेडिकल के सामने, पर्वती पायथा पर अथवा इन नंबरो पर संपर्क करे - 8055940142, 9890976626.

अगर आप भी इस पुस्तिका को जन-जन तक पहुँचाने में अथवा साक्षरता, पर्यावरण रक्षा, गरीबी उन्मूलन, नशाउन्मूलन और नारी जागरण जैसे अभियान में जुड़ना चाहते तो सम्पर्क करे - स्वतंत्र जैन - 888 880 8544